स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय,नांदेड

कला संकाय के अंतर्गत पीएच.डी. (हिन्दी) उपाधि

हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध की रूपरेखा

“डॉ.रामदरश मिश्र के उपन्यासों में व्यक्त संवेदना”

शोधनिर्देशक

डॉ. सौ. एस.एस. उप्पे

हिंदी विभागाध्यक्ष,

उज्वल ग्रामीण महाविद्यालय,

घोणसी, ता. जळकोट, जि. लातूर

शोधछात्रा

लोंढे ज्योती जयदीप

एम.ए. (हिंदी)

संशोधन केंद्र

महाराष्ट्र उदयगिरी महाविद्यालय, उदगीर जि.लातूर

अप्रैल 2016

“डॉ.रामदरश मिश्र के उपन्यासों में व्यक्त संवेदना”

विषयानुक्रमणिका

अ.क्र.	
	भूमिका
	अनुक्रमणिका
1	**प्रथम अध्याय -** डॉ.रामदरश मिश्र का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
2	**द्वितीय अध्याय -** डॉ.रामदरश मिश्र के उपन्यासों का कथ्यगत अध्ययन
3	**तृतीय अध्याय -** डॉ.रामदरश मिश्र के उपन्यासों का समीक्षात्मक अध्ययन
4	**चतुर्थ अध्याय -** डॉ.रामदरश मिश्र के उपन्यासों में व्यक्त संवेदनाओं का अध्ययन
5	**पंचम अध्याय -** समकालीन उपन्यासकारों में डॉ.रामदरश मिश्र का स्थान
6	**षष्ठ्म अध्याय -** डॉ.रामदरश मिश्र के उपन्यासों का शिल्पगत अध्ययन
7	**सप्तम् अध्याय -** उपसंहार (मूल्यांकन एवं निष्कर्ष)

“डॉ.रामदरश मिश्र के उपन्यासों में व्यक्त संवेदना”

1.1 भूमिका :

डॉ.रामदरश मिश्र जी हिंदी के वरिष्ठ उपन्यासकार, कवि, आलोचक तथा आत्मकथाकार भी हैं। गुणवत्ता और सफलता की दृष्टि से उनकी विशिष्ट पहचान है। उपन्यासकार की हैसियत से उनका योगदान अलग महत्त्व रखता है। इनके उपन्यासों का एक प्रमुख कारण इन का सुस्पष्ट मानवतावादी चिन्तन है।

भारतीय भाषाओं में मिश्र जी कविताओं और कहानियों के अनुवाद हुए हैं। उनका एक उपन्यास ‘अपने लोग’ गुजराती में अनुदित है। उनकी रचनाएँ विभिन्न स्तरों के पाठ्यक्रमों में पढ़ाई जा रही है। उनकी अनेक कृतियाँ पुरस्कृत हुई हैं। वे अनेक साहित्यिक, अकादमिक और सामाजिक संस्थाओं के अध्यक्ष रह चुके है। वे कई लघु पत्रिकाओं के सलाहकार संपादक हैं।

अवमूल्यन को बढ़ावा देने वाले तत्वों के वर्चस्व के मध्य मिश्र जी का मूल्यवादी चिन्तन आस्था का भाव जगाने में सक्षम है। शोषण का विरोध, नारी का प्रश्न, युवावर्ग का दृष्टिकोण, व्यवस्था की विकृतियाँ, व्यवस्था में परिवर्तन, लोक जीवन के मूल्य, अज्ञान, जड़ता, अंधविश्वास, साम्प्रदायिकता तथा जातिवाद का विरोध करते हुए मानवीय और सकारात्मक अवधारणाओं को समर्थन देना मिश्र जी का मुख्य उद्देश रहा है। इसलिए मैं उनके बहुआयामी व्यक्तित्व से प्रभावित होकर डॉ. रामदरश मिश्र के उपन्यासों का अध्ययन करने की ठानी।

रामदरश मिश्र हिन्दी साहित्य संसार के बहुआयामी रचनाकार है। उन्होंने गद्य एवं पद्य की लगभग सभी विधाओं में सृजनशीलता का परिचय दिया है। और अनूठी रचनाएँ समाज को दी है। चार बड़े और आठ लघु उपन्यासों में मिश्र जी ने गाँव और शहर की जिन्दगी के संश्लिष्ट और सघन यथार्थ की गहरी पहचान की है। मिश्र जी की साहित्यिक

प्रतिभा बहुआयामी है। उन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास, आलोचना और निबंध जैसी प्रमुख विधाओं में तो लिखा ही है, आत्मकथा-सहचर है समय, यात्रा वृत्त तथा संस्मरण भी लिखे है। यात्राओं के अनुभव 'तना हुआ इन्द्रधनुष्य', 'भोर का सपना' तथा 'पड़ोस की खुशबू' में अभिव्यक्ति हुए है। उन्होंने अपनी संस्मरण पुस्तक 'स्मृतियों के छन्द' में उन अनेक वरिष्ठ लेखकों, गुरुओं और मित्रों के संस्मरण दिये है जिनमें उन्हें अपनी जीवन-यात्रा तथा साहित्य यात्रा में काफी कुछ प्राप्त हुआ है। ये रचना-कर्म के साथ-साथ आलोचन कर्म से भी जुड़े रहे है। उन्होंने आलोचना, कविता ओर कथा के विकास और उनके महत्त्वपूर्ण पड़ावों की बहुत गहरी और साफ पहचान की है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध की रुपरेखा में डॉ.रामदरश मिश्र जी के उपन्यासों को प्रस्तुत किया गया है। जिनमें समाज की विभिन्न समस्याओं का समग्र चित्रण किया गया है। मुख्य रूप से उनके उपन्यासों में व्यक्त संवेदना का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। इस प्रकार विभिन्न आयामों के द्वारा अध्ययन किया है।

1.2 विषय चयन की प्रेरणा

उपन्यास में जिवन का चित्रण पुरी संवेदनामय बना देता है। उपन्यास का हर एक अंग उस व्यक्ति के जिवन का एक वो लम्हा है जो मुझे अध्ययन करने हमेशा प्रेरित करता था। अन्य विधा की तुलना से उपन्यास विधा के प्रति मेरी अधिक रूचि बढ़ती रही। जब मैं स्नातकोत्तर अध्ययन की पढ़ाई करने लगी तब से मेरे मन में उपन्यास के प्रति आकर्षण रहा है। उपन्यास की कथा वस्तुस्थिति को प्रकट करती है। उपन्यास का हर एक पैलु समाज से जुड़ा हुआ है। उपन्यास की कथावस्तु में समाज के परिवेश का वास्तविक दर्शन हुआ है। समाज से जुड़ा हर एक धागा लोगों को कैसे एक-एक गाँठ में बाँध देता है और वहीं गाँठ जब टुट जाती है तो समाज किस तरह बिखर पड़ता है। उनकी उपन्यास में अध्ययन की हुई कहीं संवेदनाएँ मैने मेरे जीवन में अनुभव किया है। इसलिए उपन्यास पर अध्ययन करना मैने स्नातकोत्तर की पढ़ाई करते समय ही तय किया था ।

आर.ए.सी. की बैठक में जब डॉ. उप्पे एस.एस. के मार्गदर्शन में मुझे अनुसंधान कार्य करना है यह तय हुआ तब उनसे विषय चयन के बारें में वार्तालाप हुआ और विचार विमर्श के बाद **"डॉ. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में व्यक्त संवेदना"** यह विषय तय हुआ।

1.3 शोध कार्य का महत्त्व

आज के युग में समाज में व्याप्त परिस्थितियाँ उपन्यास में दर्शायी गयी है। मुझे ऐसे समाज से जुड़ा, संस्कृति से जुड़ा, युवा वर्ग से जुड़ा, महिला वर्ग से जुड़ा, दलित वर्ग से जुड़ा, राजनैतिक लोगों से जुड़ा, उच्चवर्गिय लोगों की प्रवृतियों से जुड़ा और आत्मसम्मान के लिए लड रहें निम्न वर्गो के अधिकार से जुड़ा डॉ. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में एक भरापुरा साहित्य नजर आया। इसलिए डॉ. रामदरश मिश्र कें उपन्यासों आए हुए अनेकों पहलुओं का अध्ययन करने की मेंरे जिज्ञासा उभर आयी और मैं उसमें कुछ अलग खोजने का प्रयास करने लगी। उपन्यास में आया हुआ उपरोक्त संवेदनामय रूप वर्तमान स्थिति की अनेक समस्याओं को दृष्टिगोचर करता है। इसलिए उपन्यासों में व्यक्त वर्तमान रूप समाज के सम्मुख रखना शोधछात्र के अन्वेषण का प्रमुख आधार है। इसलिए डॉ. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में व्यक्त संवेदनाओं का अध्ययन आज आवश्यक है।

1.4 शोधकार्य की उपयोगिता

इस दशक की कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाएँ डॉ. रामदरश मिश्र के उपन्यासों से संबंध रखती है। उनकी उपन्यासों में देश की विद्यमान समस्याएँ स्पष्ट हुई है। जैसे सरकार की आर्थीक उदारिकरण की नीति, बेरोजगारी, नारी की समस्याएँ, शिक्षा संबंधी समस्या, गाँव की समस्याएँ, सामाजिक विघटन आदि अनेक समस्याएँ। उसी के परिणाम स्वरूप विकृत संस्कृति का निर्माण हुआ है। आज की स्थिति में पाश्चात संस्कृति के अंधानुकरण के कारण भारतीय नैतिक मूल्यों का पतन हुआ है। उपर्युक्त स्पष्ट की हुई समस्याओं का

मानवी समाज जीवन पर विपरित प्रभाव हुआ है। उपन्यास में आए हुई उपरोक्त सभी समस्याओं को वर्तमान से जुड़ाना शोधछात्र का मूल उद्देश्य है।

वर्तमान जीवन को सुखी एवं समूध्द बनाने के लिए भुतकालीन विविध घटनाओं का अध्ययन होना आवश्यक होता है। डॉ. रामदरश मिश्र जी के उपन्यासों में आए हुए विविध पहलु वर्तमान स्थिति को सुधार करने के लिए प्रेरित करती है।

1.5 शोध कार्य का लक्ष्य

वर्तमान स्थिति की सभी समस्याएँ डॉ. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में व्यक्त हुई है। भुतलकालीन घटित गलतियाँ वर्तमान में न दोहराई जाए इसलिए डॉ. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में आयी हुई सभी समस्याओं को अनुसंधान कार्य के व्दारा समाज के सम्मुख रखना अनुसंधनकर्ती का मूल लक्ष्य है।

डॉ. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में आए हुए विविध पहलुओं का अध्ययन कर वर्तमान में सदृढ समाज निर्माण किया जा सकता है। इसलिए निम्न रूप से आए हुए उनके बारह उपन्यासों का अनुसंधान कार्य में चिकित्त्सक रूप से अध्ययन किया जाएगा।

'बिना दरवाजे का मकान' की दीपा एक तरफ अपनी संघर्ष और श्रमशील जीवन के साथ ही अपना का गुजारा करती है। जब वे उच्चवर्गीय कहे जानेवाले लोगों के घर जब काम करने जाती है तब दीपा के माध्यम से उच्चवर्गीय लोगों का पर्दाफाश होता रहा है। किस तरह परिवार के बीच पनपती असंतोष की भावना इन परिवारों के माध्यम से चित्रित हुई है। इसलिए 'बिना दरवाजे का मकान' उपन्यास पढ़ने के बाद मैं बहुत प्रभावित हुई। मिश्र जी के इस उपन्यास में चित्रित 'दीपा का संघर्ष' आज की नारी के संघर्ष का प्रतिबिंब नजर आता है। उसी दृष्टि से सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक यथार्थ के साथ चित्रित होने से प्रेरणा मिली और इसीलिए मैं उनकी कृतियों पर परियोजना कार्य करने का निश्चय किया।

अध्ययन की सुविधा हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध को मैने सात अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय में मिश्र जी का व्यक्तित्व और कृतित्व की विविध पहलु को दिखाया जाएगा। डॉ.मिश्रजी का पुरा नाम रामदरश रामचन्द्र मिश्र है। माँ का नाम कँवलपाती है। डॉ.रामदरश मिश्र जी का जन्म 15 अगस्त 1924 में डुमरी गाँव में हुआ जिला कुछार अंचल (गोरखपुर, उत्तर प्रदेश) । उनका कार्य क्षेत्र कवि लेखन है। उनकी भाषा हिंदी है। और उनका काल-आधुनिक काल है। उनकी राष्ट्रीयता भारतीय है और उनका सामाजिक, साहित्यिक, प्रगतिवाद विषय है।

व्दितीय अध्याय में डॉ.रामदरश मिश्र के उपन्यासों का कथ्यगत अध्ययन किया गया है। डॉ.रामदरश मिश्र के उपन्यास आधुनिक साहित्य जगत में अपना अलग स्थान रखते है। समाज में व्याप्त यथार्थ का विराट रूप इन रचनाओं के माध्यम से चित्रित किया है। जैसे के पानी के प्राचिर में अभिव्यक्त जीवन स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले का है। इसकी कथा का संबंध पुर्वी उत्तर प्रदेश के ‘कछहार’ अंचल से है। ‘जल टुटता हुआ’ की कथा गाँव से संबंधित है। इस तरह उनसे सभी उपन्यासों में मानव का संवेदना का दर्शन होता है।

तृतीय अध्याय में डॉ.रामदरश मिश्र के उपन्यासों का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक तत्त्व सांस्कृतिक परिवेश को डॉ.रामदरश मिश्र समृध्द करते है। परिवार, वर्ण, जाति, प्रेमविवाह, यौन-शुचिता की समस्याएँ सामाजिक घटकों को प्रभावित करती है। जो जनतंत्र, नेता, सरपंच, मुखिया, अफसर, दलबदल की प्रवृत्ति से राजनीति प्रभावित होती है। आर्थिक परिवेश अमीरी-गरीबी के कारण निम्न वर्ग, मध्य वर्ग और उच्च वर्ग में विभाजित हो चला है क्योंकि बढ़ते भ्रष्टाचार के परिणाम स्वरूप घुसखोरी बढ़ती जा रही है और गरीब तथा दलितों का शोषण हो रहा है। इस तरह उपन्यासों का समीक्षात्मक अध्ययन किया जाएगा।

चतुर्थ अध्याय में हिन्दी उपन्यासों का संवेदनात्मक परिदृश्य प्रस्तुत किया है। साहित्य में संवेदना की अभिव्यक्ति का स्वरूप प्रकट करके हिन्दी उपन्यासों में संवेदना के विविध आयाम को निरूपित किया है। यहाँ हिन्दी उपन्यासों की बात करने में इतिहास के साथ न चलकर मैं कर्ता किर्तन की बजाए कृति किर्तन पर चला हूँ। समय के साथ न बँधकर सामाजिक, मनोवैज्ञानिक आदि क्षेत्र-विशेष की संवेदना को समझने का प्रयत्न किया है। साथ-साथ हिन्दी उपन्यासों में रामदरश मिश्र का स्थान निर्धारित करने का प्रयास किया गया है।

डॉ.रामदरश मिश्र जी का स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य जगत में का उनका स्थान महत्त्वपूर्ण माना जाता है। विशेष रूप से उपन्यासकारों में वे श्रेष्ठ स्थान प्राप्त कर चुके है। डॉ.रामदरश मिश्र जी का सभी साहित्य उनके जीवन का दर्पण है। उनका सभी व्यक्तित्व उदार, मानव, प्रगतिशील, विचारक, बहुमुखी प्रतिभा के धनी, कर्मठ अध्यापक आदि विविध पहलुओं से जाना जाता है।

पंचम अध्याय - समकालीन उपन्यासकारों में डॉ.रामदरश मिश्र जी का स्थान

डॉ.रामदरश मिश्र यह प्रेमचंदयुगीन उपन्यासकारों में गिने-चुने जाते हैं। इसलिए प्रेमचंद, फणीश्वरनाथ रेणू के बाद रामदरश मिश्र का स्थान हिंदी साहित्य के उपन्यासकारों के अद्वितीय है। यह कहना अनुचित न होगा।

षष्ठम् अध्याय - डॉ.रामदरश मिश्र के उपन्यासों की भाषा एवं भाषिक शिल्प

रामदरश मिश्र की भाषा ग्रामीण प्रचलित हिंदी है। उसे लोकभाषा भी कहा जाता है। हिंदी साहित्य का भाषिक ज्ञान रामरदश मिश्र को उच्च कोटि का है। उनकी भाषा एवं शैली का अध्ययन प्रस्तुत अध्याय में किया जाएगा।

सप्तम अध्याय - उपसंहार (मूल्यांकन एवं निष्कर्ष)

प्रथम अध्याय - डॉ.रामदरश मिश्र का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.1 व्यक्तित्व

जन्म

जीवन संघर्ष

शिक्षा-दीक्षा

नोकरी

अन्य

1.2 कृतित्व

उपन्यास

कहानी

निबंध

काव्य

आत्मकथन

संस्मरण

यात्रा वृत्तान्त

साक्षात्कार

समिक्षात्मक कृतियाँ

द्वितीय अध्याय - डॉ.रामदरश मिश्र के उपन्यासों का कथ्यगत अध्ययन

प्रास्ताविक

उपन्यास

पानी के प्राचिर

जल टुटता हुआ

बीच का समय

सुखता हुआ तालाब

अपने लोग

रात का सफर

आकाश की छत

बिना दरवाजे का मकान

थकी हुई सुबह

बीर बरस

परिवार

तृतीय अध्याय - रामदरश मिश्र के उपन्यासों का समीक्षात्मक अध्ययन

प्रास्ताविक

कथावस्तु

चरित्र चित्रण

शैली

चतुर्थ अध्याय - डॉ.रामदरश मिश्र के उपन्यासों में व्यक्त संवेदनाओं का अध्ययन

प्रास्ताविक

संवेदना शब्द की उत्पत्ति

संवेदना का स्वरूप

संवेदना की परिभाषा

संवेदना के विविध आयाम

सामाजिक संवेदना

राजनीतिक संवेदना

आर्थिक संवेदना

धार्मिक संवेदना

सांस्कृतिक संवेदना

जाति संवेदना

पंचम अध्याय - समकालीन उपन्यासों में डॉ.रामदरश मिश्रजी का स्थान

प्रास्ताविक

प्रेमचंद पुर्व उपन्यासकार

प्रेमचंदयुगीन उपन्यासकार

प्रेमचंदोत्तर उपन्यासकार

स्वातंत्र्योत्तर उपन्यासकार

षष्ठम् अध्याय - डॉ.रामदरश मिश्र के उपन्यासों का शिल्पगत अध्ययन

प्रास्ताविक

शिल्प शब्द की व्युत्पत्ति

स्वरूप

परिभाषा

शिल्प के तत्त्व

शिल्पविधान

सप्तम् अध्याय - मूल्यांकन एवं निष्कर्ष

1.6 संदर्भ ग्रंथ सूची

अ. मूल ग्रंथ

1) पानी के प्राचीन, प्रचारक बुक क्लब हिन्दी प्रचारक संस्थान वाराणसी-1, प्रथम संस्करण 1976 वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली-110002 संस्करण 1964

2) जल टूटता हुआ, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली-2 प्रथम संस्करण 1978 वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली-110002 संस्करण 1964

3) सूखता हुआ तालाब-नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली-2 प्रथम संस्करण 1988

4) अपने लोग - नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली-2 प्रथम संस्करण 1978

5) रात का सफर - इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, कृष्ण नगर, दिल्ली-51 प्रथम संस्करण 1988

6) आकाश की छत - वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली-2, चतुर्थ आवृत्ति 1986 छठा संस्करण-2001

7) आदिम सग - वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली-2, प्रथम संस्करण-1993

8) बिना दरवाजे का मकान - राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली-2, पहला संस्करण-1994

9) दूसरा घर, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली-2, प्रथम संस्करण 1994-2002

10) थकी हुई सुबह, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, कृष्ण नगर, दिल्ली-51 प्रथम संस्करण 1988

11) बीस बरस - वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली-2, प्रथम संस्करण 1996

ब. आधार ग्रंथ

1) हिन्दी कहानी : अन्तरंग पहचान - नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली-2, द्वितीय सं.1994

2) हिन्दी गद्य साहित्य : आधुनिक आयाम - नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली-2 द्वितीय सं. 1994 किताबघर घर, नई दिल्ली-2, प्रथम संस्करण-1994

क. पत्र-पत्रिकाएँ

ड. इंटरनेट

शोधछात्रा

लोंढे ज्योती जयदीप
उदगीर जि.लातुर

शोधनिर्देशक

डॉ. उप्पे एस.एस.
हिंदी विभाग
उज्वल ग्रामीण महाविद्यालय,
ता. जळकोट जि.लातूर